FRENCH QUEST FOR SECURITY-1

FOR: P.G.SEM-2,CC-6,UNIT-1

BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

पृष्ठभूमि

प्रथम महायुद्ध के भयंकर विनाश के पश्चात भी यूरोप के राष्ट्रों की समस्या का समाधान नहीं हुआ। इस समय फ्रांस सबसे अधिक सुरक्षा की कमी अनुभव कर रहा था। विजयी राष्ट्र में शामिल होने के बावजूद भी वह शक्तिशाली जर्मनी से भयभीत था ।यही कारण है कि वह प्रथम महायुद्ध के समाप्त होने से पूर्व ही फ्रांस ने जर्मनी के भावी आक्रमण से सुरक्षा पाने की खोज प्रारंभ कर दी। ***इतिहासकार कार*** के शब्दों में -**1919 के बाद यूरोप की समस्याओं में सबसे महत्वपूर्ण बात फ्रांस की सुरक्षा की माँग थी।**

फ्रांस के भयभीत होने का कारण

फ्रांस को विश्व युद्ध में विजय मिली थी किंतु उसकी यह खुशी क्षणिक था। उसको सबसे अधिक डर पराजित जर्मनी से था ।प्रथम महायुद्ध में अपने साथियों के सहयोग से फ्रांस ने जर्मनी को भली प्रकार पद दलित कर दिया था किंतु वह जानता था वह इसका बदला लेगा। ***1870 ई.*** के ***सेडान के युद्ध*** में बुरी तरह जर्मनी से पराजय की बात उसके दिमाग में थी। पिछले 100 वर्षों के दौरान तीन बार जर्मन सेनाओं ने फ्रांस की जमीन पर कदम रखा और चार बार जर्मनी की सरकार ने युद्ध की धमकी दी ।उन युद्धों में फ्रांस हमेशा पराजित और अपमानित हुआ था।

फ्रांस के भयभीत होने के कारण

- जर्मन लोग क्षेत्रफल तथा जनसंख्या में फ्रांस से बड़ा था |प्राकृतिक संसाधनों के मामले में भी श्रेष्ठ था|
- जर्मनी की आबादी यूरोप के अन्य राज्यों से अधिक थी और फ्रांस के अनुपात में बहुत अधिक |फ्रांस को भय था कि यदि उसकी आबादी में तनिक भी गिरावट हुई तो जर्मनी का शिकार बन सकता है|
- जर्मन लोगों में सैन्य संगठन की अपूर्व क्षमता थी |1914 में फ्रांस को 6 सप्ताह के लिए भी युद्ध में टिकना असंभव हो जाता

फ्रांस के भयभीत होने के कारण

यदि ब्रिटेन उसकी सहायता के लिए रनक्षेत्र में नहीं उतरता।

- फ्रांस का एकमात्र मित्र ***रूस*** इस समय वोल्शेविकों के हाथ में चला गया था और फ्रांस उनसे यह आशा नहीं कर सकता था कि मौका पड़ने पर वह उसकी मदद करेगा। इन्हीं सब कारणों से फ्रांस ऐसा उपाय करना चाहता था कि भविष्य में उसे संकट का सामना ना करना पड़े।वह अपनी सुरक्षा की खोज में लग गया।

फ्रांस की आरंभिक कोशिशें

जर्मनी के भावी आक्रमण से अपने को सुरक्षित करने के लिए पेरिस शांति सम्मेलन में फ्रांसीसी प्रतिनिधियों ने मांग की कि ***राइन नदी*** के ***बाएं*** तट के प्रदेश को जर्मनी से अलग करके एक अलग राज्य बना दिया जाए और वह राज्य फ्रांस के प्रभाव में रहे।फ्रांस इस तरह की व्यवस्था को वह ***भौगोलिक गारंटी(Physical guarantee)*** कहता था परंतु मित्र राष्ट्र फ्रांस को इस प्रकार की गारंटी देने के लिए तैयार नहीं थे। ***विल्सन*** तथा ***लॉयड जॉर्ज*** ने राइन नदी तक फ्रांसीसी सीमा को बढ़ाने से इंकार कर दिया।

फ्रांस की आरंभिक कोशिशें

उनका कहना था कि इस प्रकार की व्यवस्था करने से राइनलैंड के 50 लाख के लगभग जर्मन लोग अपने राष्ट्र से अलग हो जाएंगे और यह राष्ट्रीयता के सिद्धांत के विपरीत होगा ।वे राइनलैंड   को दूसरा अलसेस -लोरेन क्षेत्र नहीं बनाना चाहते थे। ऐसे में फ्रांस को अपना जिद छोड़ना पड़ा तथा निम्न बात के लिए राजी होना पड़ा :

1. 15 साल तक राइन नदी के दाएं तट पर मित्र राष्ट्र की सेनाओं का कब्जा रहेगा

फ्रांस की आरंभिक कोशिशें

2. राइन क्षेत्र का पूर्ण रूप से असैन्यीकरण हो जाए जिससे जर्मनी वहां कोई किलाबंदी नहीं कर सके

3. एक त्रिदलीय संधि की जाए जिसके अनुसार अमेरिका और ब्रिटेन यह वादा करें कि यदि भविष्य में कभी जर्मनी फ्रांस पर आक्रमण करें तो वह उसकी सहायता करेगा।

ब्रिटेन और अमेरिका ने ऐसा करने का वचन दे दिया। परंतु अमेरिका के सीनेट ने वर्साय की संधि को अस्वीकृत कर दिया।

फ्रांस की आरंभिक कोशिशें

- यूरोप की राजनीति से अमेरिका के हटने पर उसके साथ ही इंग्लैंड को सुरक्षा का आश्वासन भी समाप्त हो गया। इससे फ्रांस की सुरक्षा की समस्या बहुत जटिल हो गई। फ्रांस को अपनी सुरक्षा के लिए राष्ट्र संघ के सिवा और कोई मददगार नहीं दिखा किंतु फ्रांस इसको अपर्याप्त समझता था। फ्रांस को राष्ट्र संघ विधान की पाबंदी संबंधी धाराएं (10,16,एवं 17)प्रभावशाली नहीं दिखती थी।

फ्रांस की आरंभिक कोशिशें

- फ्रांस को यह भी मालूम था कि राष्ट्र संघ केवल अपने सदस्य राज्यों से सेना भेजने की प्रार्थना ही कर सकता है। सेना भेजने या ना भेजने का निर्णय करने का अधिकार उस देश की संसद को था। इसके अलावा सैन्य कार्रवाई काउंसिल के बड़े सदस्यों की सर्वसम्मति से ही की जा सकती थी।

फ्रांस की आरंभिक कोशिशें

- ऐसे में फ्रांस के पास दो मार्ग शेष बच गए थे जिसका अवलंबन करके वह अपनी सुरक्षा कर सकता था।पहला यह कि जर्मनी को कूटनीतिक क्षेत्र से एकदम अलग कर दिया जाए तथा उस को चारों तरफ से घेर लेने के लिए यूरोप के विभिन्न राज्यों के साथ संधि करके गुटबंदी की जाए। दूसरे राष्ट्र संघ के द्वारा ऐसी सुरक्षा प्रणालियों का सृजन किया जाए जिसके कारण आक्रमण के विरुद्ध वास्तविक गारंटी प्राप्त हो सके। फ्रांस ने दोनों मार्गों का एक साथ अवलंबन शुरू किया।

आंग्ल- फ्रांसीसी मतभेद

फ्रांस ब्रिटेन से मित्रता चाहता था। उसका विश्वास था कि अगर ब्रिटेन उसकी सुरक्षा की गारंटी दे दे तो उसकी समस्या का समाधान हो सकता है ।***जनवरी 1922*** में ब्रिटिश सरकार फ्रांस के साथ एक संधि करने के लिए तैयार हो गई,जिसमें फ्रांस को यह आश्वासन दिया गया कि यदि जर्मनी आक्रमण करता है तो ब्रिटेन फ्रांस की सहायता करेगा। तत्कालीन फ्रांसीसी प्रधानमंत्री ***पोआन्कारे*** इस आश्वासन के साथ एक सैन्य समझौता भी करना चाहते थे जिसमें यह स्पष्ट हो कि ब्रिटिश सेना किस प्रकार से सहायता देगी।

आंग्ल- फ्रांसीसी मतभेद

- ब्रिटिश सरकार इस बात के लिए तैयार नहीं थी फलत:आंग्ल- फ्रांसीसी वार्तालाप निरर्थक साबित हो गया। दरअसल प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात विराम संधि पर हस्ताक्षर होने के पश्चात ही ब्रिटेन और फ्रांस अंतरराष्ट्रीय मामलों में एक-दूसरे के विपरीत विचार व्यक्त करने लगे। ***लायड जॉर्ज*** को विश्वास था कि जर्मनी को इतना पस्त कर दिया गया है कि कम से कम 60 साल के पूर्व अपनी खोई हुई शक्ति को वह पुनः प्राप्त नहीं कर सकता लेकिन ***क्लिमेंसो*** यह मानता था कि जर्मन जब चाहेंगे फ्रांस   पर आक्रमण कर देंगे।

आंग्ल- फ्रांसीसी मतभेद

- युद्ध से हुई क्षति की भरपाई के लिए ब्रिटेन जर्मनी की आर्थिक प्रगति चाहता था क्योंकि जर्मनी ,ब्रिटेन का एक बहुत बड़ा बाजार था परंतु फ्रांस के लिए पुनर्निर्मित जर्मनी सबसे बड़ा खतरा था। ब्रिटेन यूरोपीय शक्ति संतुलन स्थापित करना चाहता था। शक्तिशाली फ्रांस संसार में ब्रिटिश साम्राज्यवादी हितों के हक में अच्छा नहीं था ।ब्रिटेन को साम्यवादी रुस का भी डर था ।इस खतरे को रोकने के लिए व जर्मनी को शक्तिशाली बनाना चाहता था। इस प्रकार दोनों देशों के राष्ट्रीय स्वार्थ एक दूसरे के विपरीत थे।

बेल्जियम के साथ संधि

- जब फ्रांस ब्रिटेन की तरफ से निराश हो गया तो वह यूरोप के उन विविध तृप्त राज्यों की तरफ झुका जिनका हित वर्साय संधि द्वारा स्थापित व्यवस्था को बनाए रखने में था। इस दिशा में उसका पहला कदम ***बेल्जियम*** के साथ समझौता था। ***7 Sept. 1920*** को दोनों देशों के सैन्य अधिकारियों ने एक समझौता किया जैसे राष्ट्र संघ में दर्ज करा दिया गया था किंतु महत्वपूर्ण शर्तें गुप्त रखी गई थी ।

बेल्जियम के साथ संधि

- इस संधि के अनुसार दोनों देशों ने यह निर्णय किया कि एक देश के ऊपर कोई अन्य देश आक्रमण करें तो दूसरा देश अपने मित्र की सहायता करेगा ।दोनों देशों के मध्य यह संधि 15 वर्षों तक चलती रही। इस सैन्य गुटबंदी के कारण उत्तर-पश्चिम में फ्रांस की सीमा सुरक्षित हो गई

पोलैंड के साथ संधि

- फ्रांस को एक शक्तिशाली राज्य को मित्र बनाने की आवश्यकता थी इस लिहाज से ***पोलैंड*** बिल्कुल सही था तथा मैत्री के लिए परिस्थितियां भी अनुकूल थीं। पोलैंड का निर्माण करते हुए राष्ट्रीयता के सिद्धांत का पूर्ण रुप से पालन नहीं किया गया था। उसमें अनेक ऐसे प्रदेशों को शामिल कर दिया गया था जिन्हें वस्तुतः जर्मनी का अंग होना चाहिए था ।साथ ही ***पोलिश गलियारे(Polish Corridor)***के निर्माण के कारण जर्मनी दो भागों में बट गया था। ऐसे में स्वाभाविक था कि जर्मनी इस गलियारे का नामोनिशान मिटा दे।

पोलैंड के साथ संधि

कुल मिलाकर पोलैंड को जर्मनी के आक्रमण की आशंका हमेशा बनी रहती थी ।जर्मन आक्रमण की आशंका ने इन दोनों देशों को एक सूत्र में बांध दिया। ***19 Feb. 1921*** को दोनों देशों के बीच एक समझौता हुआ जिसमें दोनों देशों न केवल राजनीतिक क्षेत्र में परस्पर सहयोग का वचन दिया अपितु गुप्त रूप से यह तय किया कि सैन्य दृष्टि से भी वे दूसरे की सहयोग करेंगे। संधि की शर्तें निम्नलिखित थी-

1.बाहरी आक्रमण से अपनी रक्षा के लिए दोनों देश एक दूसरे का साथ देंगे

पोलैंड के साथ समझौता

2. दोनों देशों ने पारस्परिक व्यापार में चुंगी कम कर दी

3. दोनों देश समान उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परस्पर विचार विमर्श करते रहेंगे

4. फ्रांस ने पोलैंड को पर्याप्त युद्ध सामग्री देने का आश्वासन दिया। यह धारा गुप्त रखी गई थी।

- 1922 में इस संधि का अनुमोदन हो गया और 1932 में इसकी अवधि 10 वर्ष के लिए बढ़ा दी गई।

इस प्रकार दोनों संधियों से फ्रांस को पश्चिम में बेल्जियम तथा पूर्व में पोलैंड से सुरक्षा का आश्वासन मिला।

लघु गुट का निर्माण

- दिसंबर 1921 में ब्रिटेन के साथ संधि करने की असफल कोशिश के पश्चात फ्रांस अब छोटे-छोटे राज्यों को संगठित करने का काम शुरू किया। अपनी स्थिति को सुरक्षित रखने के लिए **1920 -21** में उसने ***चेकोस्लोवाकिया***, ***यूगोस्लाविया*** और ***रोमानिया*** के साथ एक त्रिगुट बनाया। यह त्रिगूट ***लघु मैत्री संघ*** **(Little Entente)** के नाम से प्रसिद्ध है।

To be continued....